रिसाला नं. 92

Samundari Gumbad (Hindi)

तर्मीम शुदा

समुन्दरी गुम्बद

रोज़ाना जन्नत की चौखट चूमिये

माँ बाप के ना फ़रमान को जीते जी सज़ा मिलती है

माँ बाप बद दुआ देने से बचें तो अच्छा है

ज़ालिम वालिदैन की भी फ़रमां बरदारी लाज़िमी है

वालिदैन के ना फ़रमान की कोई इबादत मक़्बूल नहीं

इस्लामी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार

चलने की 15 सुन्नतें और आदाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

समुन्दरी गुम्बद[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठेंगे।

ज़ोर से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला बख़्शा गया

किसी बुज़ुर्ग ने एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? बोला : मैं एक मुह़द्दिस साह़िब के यहां ह़दीसे पाक लिखा करता था, उन्हों ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो[2] जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा तो मैं ने बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा नीज़ ह़ाज़िरीन ने सुना तो उन्हों ने भी दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** तआ़ला ने इस की बरकत से हम सब को बख़्श दिया है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٢٥٤ مؤسسة الريان بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مـــــــــــدينـــه

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (18 रजबुल मुरज्जब सि. 1431 हि./1-7-10) में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को वह्य फ़रमाई कि समुन्दर के कनारे जाइये और हमारी कुदरत का नज़ारा कीजिये। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने मुसाह़िबीन के हमराह तशरीफ़ ले गए मगर कोई ऐसी चीज़ नज़र न आई, चुनान्चे एक **जिन्न** को हुक्म दिया कि समुन्दर में ग़ोत़ा लगा कर अन्दर की ख़बर लाओ। उस ने ग़ोत़ा लगाने के बा'द वापस आ कर अ़र्ज़ की **:** मैं तह तक नहीं पहुंच सका और न ही कोई शै नज़र आई। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से **त़ाक़त वर जिन्न** को हुक्म दिया, उस ने पहले जिन्न के मुक़ाबले में दुगनी गहराई तक ग़ोत़ा लगाया मगर वोह भी कोई ख़बर न ला सका। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने वज़ीर ह़ज़रते **आसिफ़ बिन बरख़िया** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को हुक्म दिया उस ने थोड़ी ही देर में एक आ़लीशान काफ़ूरी चार दरवाज़ों वाला सफ़ेद **समुन्दरी गुम्बद** ला कर सय्यिदुना **सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर कर दिया! उस का एक दरवाज़ा **मोती** का, दूसरा **याक़ूत** का, तीसरा **हीरे** का और चौथा **ज़मर्रुद** का था, चारों दरवाज़े खुले होने के बा वुजूद समुन्दर के पानी का कोई क़त़रा अन्दर नहीं था। उस **समुन्दरी गुम्बद** के अन्दर एक ह़सीन नौ जवान साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस मश्ग़ूले नमाज़ था, जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सलाम कर के उस से उस **समुन्दरी गुम्बद** का राज़ दरयाफ़्त किया। उस ने अ़र्ज़ की **: या नबिय्यल्लाह !** मेरा बाप मा'ज़ूर और वालिदा नाबीना थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं ने सत्तर70 साल उन की ख़िदमत की, मेरी मां ने इन्तिक़ाल से पहले दुआ़ की **: या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे बेटे को दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़त़ा फ़रमा। वालिदे मोह़तरम

ने ब वक़्ते वफ़ात दुआ फ़रमाई : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे बेटे को ऐसी जगह इ़बादत पर लगा कि शैत़ान मुदाख़लत न करे । वालिदे मर्हूम की तदफ़ीन के बा'द जब मैं साहि़ले समुन्दर पर आया तो मुझे येह **समुन्दरी गुम्बद** नज़र आया, मैं इस के अन्दर दाख़िल हो गया । इतने में एक **फ़िरिश्ता** आया और उस ने इस गुम्बद को समुन्दर की तह में उतार दिया । **सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उस ने अ़र्ज़ की, कि मैं ह़ज़रते **सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के मुक़द्दस दौर में यहां आया हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जान लिया कि **इस को दो हज़ार 2000 साल इस "समुन्दरी गुम्बद" में गुज़र चुके हैं मगर अब तक जवान है,** उस का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था । ग़िज़ा के मुतअ़ल्लिक़ उस ने बताया : रोज़ाना एक **सब्ज़ परिन्दा** अपनी चोंच में कोई ज़र्द (या'नी पीली) चीज़ लाता है, मैं उसे खा लेता हूं, उस में दुन्या की तमाम ने'मतों की लज़्ज़त होती है, उस से मेरी भूक और प्यास मिट जाती है । इस के इ़लावा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ गर्मी, सर्दी, नींद, सुस्ती, ग़ुनूदगी, ना मानूसिय्यत और वह़शत (या'नी घबराहट व ख़ौफ़) येह तमाम चीज़ें मुझ से दूर रहती हैं । इस के बा'द उस नौ जवान की ख़्वाहिश पर **सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का हुक्म पा कर ह़ज़रते सय्यिदुना **आसिफ़ बिन बरख़िया** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **समुन्दरी गुम्बद** को उठा कर समुन्दर की तह में पहुंचा दिया । इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप सब पर रह़्म फ़रमाए, देखा आप ने कि **वालिदैन** की दुआ किस क़दर

मक़्बूल होती है ! मां बाप की ना फ़रमानी से बचो ।

(رَوْضُ الرِّیاحِین ص۲۳۳ مُلَخَّصاً دارالکتب العلمیة بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत बड़ी सआदत है। अगर उन का दिल ख़ुश हो जाए और वोह दुआ कर दें तो बेड़ा पार हो जाता है। इस ज़िम्न में एक और **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** सुनिये और झूमिये :

ज़ख़्मी उंगली

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی फ़रमाते हैं कि सर्दियों की एक सख़्त रात मेरी मां ने मुझ से पानी मांगा, मैं आबख़ौरा (या'नी गिलास) भर कर ले आया मगर मां को नींद आ गई थी, मैं ने जगाना मुनासिब न समझा, पानी का आबख़ौरा लिये इस इन्तिज़ार में मां के क़रीब खड़ा रहा कि बेदार हों तो पानी पेश करूं। खड़े खड़े काफ़ी देर हो चुकी थी और आबख़ौरा से **कुछ पानी बह कर मेरी उंगली पर जम कर बर्फ़ बन गया था।** बहर ह़ाल जब वालिदए मोह़तरमा बेदार हुईं तो मैं ने आबख़ौरा पेश किया, बर्फ़ की वजह से चिपकी हुई उंगली जूं ही आबख़ौरे (या'नी पानी के गिलास) से जुदा हुई उस की खाल उधड़ गई और "ख़ून" बहने लगा, मां ने देख कर फ़रमाया : "येह क्या ?" मैं ने सारा माजरा अ़र्ज़ किया तो उन्हों ने हाथ उठा कर दुआ की : **ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ!

मैं इस से राज़ी हूं तू भी इस से राज़ी रह।

(نزھۃ المجالس ج۱ ص۲۶۱ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ाना जन्नत की चौखट चूमिये

जिन ख़ुश नसीबों के मां बाप ज़िन्दा हैं उन को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक बार उन के हाथ पाउं ज़रूर चूमा करें वालिदैन की ता'ज़ीम का बड़ा दरजा है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم है : اَلْجَنَّۃُ تَحْتَ اَقْدَامِ الْاُمَّھَاتِ या'नी जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है। (مسندُ الشّھاب ج ۱ص ۱۰۲ حدیث۱۱۹) या'नी इन से भलाई करना जन्नत में दाख़िले का सबब है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 88 पर है : वालिदा के क़दम को बोसा भी दे सकता है, ह़दीस में है : "जिस ने अपनी वालिदा का पाउं चूमा, तो ऐसा है जैसे जन्नत की चौखट (या'नी दरवाज़े) को बोसा दिया।"

(دُرِّمُختار ج۹ ص۶۰۶ دارالمعرفۃ بیروت)

मां के सामने आवाज़ बुलन्द हो जाने पर दो ग़ुलाम आज़ाद किये

मां या बाप को दूर से आता देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये, उन से आंखें मिला कर बात मत कीजिये, बुलाएं तो फ़ौरन लब्बैक (या'नी ह़ाज़िर हूं) कहिये, तमीज़ के साथ "आप जनाब" से बात

कीजिये, उन की आवाज़ पर हरगिज़ अपनी आवाज़ बुलन्द न होने दीजिये। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न** رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ को उन की मां ने बुलाया तो जवाब देते वक़्त उन की आवाज़ क़दरे (या'नी थोड़ी सी) बुलन्द हो गई, इस वजह से उन्हों ने **दो ग़ुलाम आज़ाद** किये।

(حِلْيَةُ الْاَولیاء ج۳ص۴۵ رقم۳۱۰۳ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

बार बार ह़ज्जे मबरूर का सवाब कमाइये

سُبْحٰنَ الله ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين मां बाप के किस क़दर क़द्रदान हुवा करते थे और उन की कैसी अ़ज़ीम **मदनी सोच** थी। हम "दो ग़ुलाम" कहां से लाएं! अफ़्सोस! इस त़रह़ के मुआ़मलात में "दो मुर्ग़ियां" बल्कि **दो अन्डे** भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने का हम में तो जज़्बा नहीं! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मां बाप की **अहम्मिय्यत** समझने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन। आइये! बिग़ैर किसी ख़र्च के बिलकुल मुफ़्त सवाब का ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिये। ख़ूब हमदर्दी और प्यार व **मह़ब्बत** से **मां बाप** का दीदार कीजिये, **मां बाप** की त़रफ़ ब नज़रे रह़मत देखने के भी क्या कहने! **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है **:** जब औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये हर नज़र के बदले ह़ज्जे मबरूर (या'नी मक़्बूल ह़ज) का सवाब लिखता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की **:** अगर्चे दिन में **सो मर्तबा** नज़र करे! फ़रमाया **:** نَعَمْ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ या'नी "हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और अत़्यब (या'नी सब से ज़ियादा पाक) है।" **(شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص ۱۸۶ حدیث ۷۸۵۶)** यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर शै

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

पर क़ादिर है, वोह जिस क़दर चाहे दे सकता है, हरगिज़ आ़जिज़ व मजबूर नहीं लिहाज़ा अगर कोई अपने मां बाप की त़रफ़ रोज़ाना 100 बार भी **रह़मत** की नज़र करे तो वोह उसे 100 **मक़्बूल ह़ज** का सवाब इनायत फ़रमाएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत का साथी

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक बार परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ गुज़ार हुए । या रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मेरा **जन्नत का साथी** दिखा दे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : फ़ुलां शहर में जाओ, वहां फ़ुलां क़स्साब तुम्हारा जन्नत का साथी है । चुनान्चे सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वहां उस क़स्साब के पास तशरीफ़ ले गए, (ना वाक़िफ़िय्यत के बा वुजूद मुसाफ़िर व मेहमान होने के नाते) उस ने आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दा'वत की । जब खाना खाने बैठे तो उस ने एक बड़ा सा टोकरा अपने पास रख लिया, अन्दर दो निवाले डालता और एक निवाला ख़ुद खाता । इतने में किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी, क़स्साब उठ कर बाहर गया । सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस ज़म्बील (या'नी टोकरे) में देखा तो उस के अन्दर ज़ईफ़ुल उ़म्र मर्द व औ़रत थे । सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नज़र पड़ते ही उन के होंटों पर मुस्कराहट फैल गई, उन्हों ने आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रिसालत की शहादत (या'नी गवाही) दी और उसी वक़्त रिह़लत (या'नी इन्तिक़ाल)

कर गए। क़स्साब वापस आया तो ज़म्बील में अपने वालिदैन को फ़ौत शुदा देख कर मुआ़मला समझ गया और आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दस्त बोसी कर के अ़र्ज़ की : आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते मूसा **कलीमुल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) मा'लूम होते हैं। फ़रमाया : तुम्हें कैसे अन्दाज़ा हुवा ? अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप रोज़ाना गिड़गिड़ा कर दुआ़ किया करते थे कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें **ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के जल्वों में मौत नसीब करना। इन दोनों[2] के इस त़रह़ अचानक इन्तिक़ाल फ़रमाने से मैं ने अन्दाज़ा लगाया कि आप ही ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) होंगे। क़स्साब ने मज़ीद अ़र्ज़ की : मेरी मां जब खाना खा लेती, तो खुश हो कर मेरे लिये यूं दुआ़ किया करती थी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे बेटे को **जन्नत** में **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) का साथी बनाना। सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मुबारक हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम को मेरा **जन्नत का साथी** बनाया है। **(نُزھۃُ الْمَجالس ج ۱ ص ۲۶۶ دارالکتب العلمیۃ بیروت)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मां बाप के ना फ़रमान को जीते जी सज़ा मिलती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? मां बाप की दुआ़ औलाद के ह़क़ में किस क़दर मक़्बूल होती है। अगर वालिदैन नाराज़ हो कर बद दुआ़ कर दें तो वोह भी मक़्बूल है। लिहाज़ा मां बाप को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

हमेशा ख़ुश रखना चाहिये। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मां बाप तेरी दोज़ख़ और जन्नत हैं। **(اِبن ماجه ج٤ ص١٨٦ حديث ٣٦٦٢)** एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : सब गुनाहों की सज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां बाप की ना फ़रमानी की सज़ा जीते जी पहुंचाता है। **(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٥ ص٢١٦ حديث ٧٣٤٥ دارالمعرفة بيروت)**

मां को जवाब न देने वाला गूंगा हो गया

मन्क़ूल है : एक शख़्स को उस की मां ने आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया इस पर उस की मां ने उसे बद दुआ दी तो वोह **गूंगा** हो गया। (بِرُّ الوالِدَين لِلطَّرطُوشی ص٧٩ مؤسسة الكتب الثقافية بيروت)

मां बाप बद दुआ देने से बचें तो अच्छा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मां की पुकार का जवाब न देने वाला जीते जी **गूंगा** हो गया ! इस में मां बाप के ना फ़रमानों के लिये जहां **इब्रत के मदनी फूल** हैं वहां मां बाप के लिये भी **मक़ामे ग़ौर** है, ख़ुसूसन वोह माएं जो बात बात पर अपनी औलाद को इस त़रह़ कह कर कि तेरा **सत्तियानास** जाए, तू फूट पड़े, तुझे कोढ़ निकले वग़ैरा कौसनें (या'नी बद दुआएं) देती हैं उन को अपनी ज़बान क़ाबू में रखनी चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि क़बूलिय्यत की साअ़त (या'नी घड़ी) हो, दुआ क़बूल हो जाए और औलाद को सचमुच "कुछ" हो जाए और यूं

मां ख़ुद भी टेन्शन में आ जाए ! लिहाज़ा औलाद को सिर्फ़ दुआए ख़ैर से नवाज़ते रहना अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) है ।

वालिदैन दूसरे मुल्क से बुलाएं तब भी आना होगा

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र बेशक सआदत है, **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों और दीगर मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये, बैरूने मुल्क सफ़र करना वहां 12 माह या 25 माह रहना भी बड़े शरफ़ की बात है मगर मां बाप की दिल आज़ारी होती हो, उन को इस से सख़्त परेशानी का सामना करना पड़ता हो तो हरगिज़ सफ़र मत कीजिये, **दा'वते इस्लामी** को दुन्या भर में आम करने का मक़्सद अपनी "वाह वाह" करवाना नहीं, **रिज़ाए इलाही** पाना है और मां बाप का दिल दुखा कर रिज़ाए इलाही की मन्ज़िल हरगिज़ नहीं मिल सकती, नीज़ दूसरे शहरों या मुल्कों में नोकरी या कारोबार करने वाले भी मां बाप की इताअत करते हुए ही सफ़र इख़्तियार करें और येह मस्अला अच्छी तरह ज़ेह्न नशीन कर लें जैसा के **दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअत**" हिस्सा 16 सफ़हा 202 पर है : "येह (या'नी बेटा) परदेस में है, वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त लिखना काफ़ी नहीं है। यूहीं वालिदैन को इस की **ख़िदमत की हाजत** हो तो आए और उन की ख़िदमत करे ।"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दूध पीता बच्चा बोल उठा !

मां बाप जब आवाज़ दें बिला उ़ज़्र जवाब में ताख़ीर न कीजिये, बा'ज़ लोग इस में सख़्त ला परवाही से काम लेते हैं और जवाब में ताख़ीर को مَعَاذَاللّٰه बुरा भी नहीं समझते ह़ालां कि अगर नफ़्ल पढ़ रहे हैं और मां बाप को इस का इ़ल्म नहीं तो मा'मूली त़ौर पर भी अगर वोह पुकारें तो नमाज़ तोड़ कर जवाब देना होगा (माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 638) (बा'द में उस नमाज़े नफ़्ल का इआ़दा या'नी दोबारा अदा करना वाजिब है) जो लोग वालिदैन की पुकार पर ख़्वाह म ख़्वाह बे तवज्जोही (No Lift) का मुज़ाहरा कर के उन का दिल दुखाते हैं वोह सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं। मां आख़िर मां होती है, बसा अवक़ात ग़लत़ फ़हमी में भी उस के मुंह से **बद दुआ़** निकल जाए और अगर क़बूलिय्यत की घड़ी हो तो औलाद आज़माइश में पड़ जाती है, इस ज़िम्न में "**बुख़ारी शरीफ़**" में एक इस्राईली बुज़ुर्ग की निहायत इ़ब्रत आमोज़ **ह़िकायत** बयान की गई है चुनान्चे **सुल्त़ाने दो जहान**, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : बनी इस्राईल में **जुरैज** नामी एक शख़्स था, वोह नमाज़ पढ़ रहा था, उस की मां आई और उसे आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया। कहने लगा : नमाज़ पढ़ूं या इस का जवाब दूं। फिर उस की मां आई (और जवाब न पा कर उस ने बद दुआ़ दी) "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक येह किसी फ़ाह़िशा (या'नी बद चलन) औ़रत का मुंह न देखे।" **जुरैज** एक दिन इ़बादत ख़ाने में था, एक औ़रत ने कहा : मैं इसे बहका दूंगी, लिहाज़ा

वोह आ कर **जुरैज** से बातें करने लगी लेकिन उस (या'नी जुरैज) ने इन्कार किया, आख़िर वोह एक चरवाहे के पास गई और अपने आप को उस के ह़वाले कर दिया चुनान्चे उस ने एक बच्चा जना और उसे **जुरैज** से मन्सूब कर डाला, लोग **जुरैज** के पास आए, उस का इ़बादत ख़ाना तोड़ कर उसे बाहर निकाल दिया और उसे बुरा भला कहा। **जुरैज** ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर उस बच्चे के पास आया और कहा : **बच्चे !** तेरा बाप कौन है ? उस ने जवाब दिया : फ़ुलां **चरवाहा ।** तो लोगों ने **जुरैज** से कहा : हम तुम्हारा इ़बादत ख़ाना **सोने** का बना देंगे। उस ने कहा : नहीं वैसा ही **मिट्टी** का बना दो।

(بُخاری ج ٢ص١٣٩حديث٢٤٨٢،مُسلم ص١٣٨٠حديث ٢٥٥٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

मां को कन्धों पर उठाए गर्म पथ्थरों पर छ मील......

वालिदैन के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं इन से **सबुक दोश** (या'नी बरिय्युज़्ज़िम्मा) होना मुम्किन नहीं है चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नबवी علٰی صاحِبِها الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में अ़र्ज़ की : एक राह में ऐसे **गर्म पथ्थर** थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता ! मैं अपनी मां को गरदन पर सुवार कर के **छ**[6] **मील** तक ले गया हूं, क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ? **सरकारे नामदार** علٰی صاحِبِها الصَّلٰوةُ وَالسَّلام ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके।

(اَلْمُعْجَم الصَّغِير لِلطَّبَرانی ج١ص٩٢حديث ٢٥٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

अगर औ़रत के बजाए मर्द को बच्चा जनना पड़ता तो..........!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मां ने अपने बच्चे के लिये सख़्त तक्लीफ़ें उठाई होती हैं, दर्दे ज़िह या'नी बच्चे की विलादत (DELIVERY) के वक़्त होने वाले दर्द को मां ही समझ सकती है, मर्द के लिये किस क़दर आसानी है कि उसे डिलिवरी नहीं होती। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرَّحمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 27 सफ़ह़ा 101 पर फ़रमाते हैं : मर्द का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ लज़्ज़त का है और औ़रत को सदहा मसाइब का सामना है, नव महीने पेट में रखती है कि चलना फिरना, उठना, बैठना दुश्वार होता है, फिर पैदा होते वक़्त तो हर झटके पर मौत का पूरा सामना होता है, फिर अक़्साम अक़्साम के दर्द में निफ़ास वाली (या'नी विलादत के बा'द आने वाले ख़ून की तक्लीफ़ में मुब्तला होने वाली) की नींद उड़ जाती है। इसी लिये (**अल्लाह** तबारक व तआ़ला) फ़रमाता है :

حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ

(پ٢٦،الاحقاف:١٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान: इस की मां ने इसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी इस को तक्लीफ़ से और इसे उठाए फिरना और इस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है।

तो हर बच्चे की पैदाइश में औ़रत को कम अज़ कम तीन बरस बा मशक़्क़त जेलख़ाना है। **मर्द के पेट से अगर एक दफ़्अ़ा भी ''चूहे का बच्चा'' पैदा होता तो उ़म्र भर को कान पकड़ लेता।**

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 27, स. 101, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

बीवी हमदर्दी की ह़क़दार होती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के मुबारक फ़तवे से जहां मां की हैसिय्यत मा'लूम हुई वहीं बीवी की **अहम्मिय्यत** भी खुली। शोहर को चाहिये कि बिल खु़सूस "उम्मीद" या'नी ह़म्ल के अय्याम में अपनी बीवी पर खु़सूसी शफ़्क़त करे, काम काज में उस का ख़ूब हाथ बटाए, मेह़नत का काम न ले, डांट डपट कर के या किसी त़रह़ भी उस के सदमे (TENSION) का सबब न बने। **अल ग़रज़** जितना बन पड़े उसे आराम पहुंचाए। जब कभी अपने **मदनी मुन्ने** को प्यार करे तो साथ ही उस की मां पर भी रह़्म की नज़र डाल दे कि इस फुदक्ते फिरते दिल को लुभाने वाले "खिलौने" की फ़राहमी में इस बेचारी ने किस क़दर सख़्त तकालीफ़ बरदाश्त की हैं।

दूध पिलाने के मस्अले की वज़ाह़त

आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के मुबारक फ़तवे में आयते करीमा के अन्दर जो इर्शाद हुवा कि "इस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है" इस का तअ़ल्लुक़ दूध के रिश्ते और हु़रमते निकाह़ से है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 2 सफ़्ह़ा 36 पर है : बच्चे को (हिजरी सिन के हि़साब से) दो2 बरस तक दूध पिलाया जाए, इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं, दूध पीने वाला लड़का हो या लड़की और येह जो बा'ज़ अ़वाम में मशहूर है कि लड़की को दो बरस और लड़के

को ढाई बरस तक पिला सकते हैं येह सह़ीह़ नहीं। येह हुक्म दूध पिलाने का है और निकाह़ ह़राम होने के लिये ढाई बरस का ज़माना है या'नी **दो[2] बरस के बा'द अगर्चे दूध पिलाना ह़राम है** मगर (हिजरी सिन के ए'तिबार से) ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिला देगी, हुरमते निकाह़ साबित हो जाएगी और इस के बा'द अगर पिया, तो हुरमते निकाह़ नहीं अगर्चे पिलाना जाइज़ नहीं।

ज़ालिम वालिदैन की भी फ़रमां बरदारी लाज़िमी है

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رضی اللّٰہ تعالٰی عنہما से रिवायत है कि सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि अपने मां बाप का फ़रमां बरदार है, उस के लिये सुब्ह़ ही को जन्नत के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और मां बाप में से एक ही हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। और जिस ने इस ह़ाल में शाम की, कि मां बाप के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है उस के लिये सुब्ह़ ही को जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और (मां बाप में से) एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : अगर्चे मां बाप उस पर ज़ुल्म करें। फ़रमाया : अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٢٠٦ حدیث ٧٩١٦ دارالکتب العلمیة بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई़ वोह शख़्स बड़ा ख़ुश नसीब है जो मां बाप को ख़ुश रखता है, जो बद नसीब मां बाप को नाराज़ करता है उस के लिये बरबादी है। **अल्लाह तबारक व तआ़ला** पारह **15 सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 23 ता 25 में इर्शाद फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ؕ ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने उन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं ''हूं'' (उफ़्) न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना। और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने छुटपन में मुझे पाला। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है।

बचपन में मां भी तो औलाद की ''गन्दगी'' बरदाश्त करती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुन्दरजए बाला आयाते करीमा में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है और खुसूसन इन के बुढ़ापे में ज़ियादा ख़िदमत की ताकीद फ़रमाई है। यक़ीनन मां बाप का बुढ़ापा इन्सान को इम्तिह़ान में डाल देता है, सख़्त बुढ़ापे में बसा अवक़ात बिस्तर ही पर बौल व बराज़ (या'नी गन्दगी) की तरकीब होती है जिस की वजह से उ़मूमन औलाद बेज़ार हो जाती है, मगर याद रखिये ! ऐसे ह़ालात में भी मां बाप की ख़िदमत लाज़िमी है, बचपन में मां भी तो आख़िर बच्चे की गन्दगी बरदाश्त करती ही है। बुढ़ापे और बीमारियों के बाइ़स मां बाप के अन्दर ख़्वाह कितना ही चिड़चिड़ा पन

आ जाए, सठिया जाएं, ख़ूब बड़बड़ाएं, बिला वजह लड़ें, चाहे कितना ही झगड़ें, बेशक परेशान कर के रख दें मगर सब्र, सब्र और सब्र ही करना और उन की ता'ज़ीम बजा लाना है। उन से बद तमीज़ी करना, उन को झाड़ना वग़ैरा दर कनार उन के आगे "उफ़" तक नहीं करना है, वरना बाज़ी हाथ से निकल सकती और दोनों जहान की तबाही मुक़द्दर बन सकती है कि वालिदैन का दिल दुखाने वाला इस दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और आख़िरत के अ़ज़ाब का भी ह़क़दार होता है।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का

वरना इस में है ख़सारा[1] आप का (वसाइले बख़्शिश, स. 377)

गधा नुमा मुर्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़व्वाम बिन हौशब علیہ رحمۃاللہِ الرَّب (जो कि तब्ए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग गुज़रे हैं और इन्हों ने सि. 148 हि. में वफ़ात पाई) फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं किसी मह़ल्ले से गुज़रा, उस के कनारे पर क़ब्रिस्तान था, बा'दे अ़स्र एक **क़ब्र** शक़ हुई (या'नी फटी) और उस में से एक ऐसा आदमी निकला जिस का **सर गधे जैसा और बाक़ी जिस्म इन्सान** का था, वोह तीन बार गधे की त़रह़ रैंका (या'नी चीख़ा), फिर **क़ब्र** में चला गया और **क़ब्र** बन्द हो गई। एक **बड़ी बी** बैठी (सूत) कात रही थीं, एक ख़ातून ने मुझ से कहा : बड़ी बी को देख रहे हो ? मैं ने कहा : इस का क्या मुआ़मला है ? कहा : येह **क़ब्र** वाले की मां है, वोह **शराबी** था, जब शाम को घर आता, मां नसीह़त करती कि ऐ बेटे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर,

1 : नुक़्सान

आख़िर कब तक इस नापाक को पियेगा ! येह जवाब देता : तू **गधे** की त़रह़ ढीचूं ढीचूं करती है। इस शख़्स का अ़स्र के बा'द इन्तिक़ाल हुवा, जब से फ़ौत हुवा है हर रोज़ बा'दे अ़स्र इस की **क़ब्र** शक़ होती है और यूं तीन बार **गधे** की त़रह़ चिल्ला कर फिर **क़ब्र** में समा जाता है और **क़ब्र** बन्द हो जाती है।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب للمنذری ج۲ ص۲۲٦ حدیث ۱۷ دارالکتب العلمیة بیروت)

वालिदैन के ना फ़रमान की कोई इ़बादत मक़्बूल नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु तव्वाब عَزَّوَجَلَّ की जनाब में हम तौबा करते और उस से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। आह ! मां बाप की दिल आज़ारी किस क़दर रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइ़स है। ह़दीसे पाक में है : عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ या'नी "क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है।" **(نسائی ص۲۲۵ حدیث۱۳۰۵)** कभी कभी दुन्या में भी इस का मन्ज़र दिखा दिया जाता है ताकि लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें। अपने **बाप** के ना फ़रमान के **मुतअ़ल्लिक़** किये गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** علیہ رحمۃ الرحمٰن फ़रमाते हैं : **बाप** की ना फ़रमानी **अल्लाहु** जब्बार व क़ह्हार की ना फ़रमानी है और **बाप** की नाराज़ी **अल्लाहु** जब्बार व क़ह्हार की नाराज़ी है, आदमी **मां बाप** को राज़ी करे तो वोह उस के **जन्नत** हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के **दोज़ख़** हैं। **जब तक बाप को राज़ी न करेगा, उस का कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई नेक**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

अ़मल अस्लन मक़्बूल नहीं, अ़ज़ाबे आख़िरत के इ़लावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला (या'नी शदीद आफ़त) **नाज़िल होगी, मरते वक़्त** مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है।** (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 384, 385) मां बाप مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़िर भी हों तब भी शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए उन के साथ हुस्ने सुलूक ज़रूरी है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द 2 सफ़्ह़ा 452 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہِ القوی ''आ़लमगीरी'' के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : ''अगर किसी मुसल्मान का बाप या मां काफ़िर है और कहे कि तू मुझे बुतख़ाने पहुंचा दे तो न ले जाए और अगर वहां से आना चाहते हैं तो ला सकता है।'' **(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۳۵۰ دارالفکر بیروت)**

मां बाप को गालियां दिलवाने वाले

जो लोग दूसरों को मां की गाली निकालने के आ़दी होते हैं वोह बहुत बुरे बन्दे हैं, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' हि़स्सा 16 सफ़्ह़ा 195 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہِ القوی नक़्ल करते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : येह बात कबीरा गुनाहों में है कि आदमी अपने वालिदैन को गाली दे। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم क्या कोई अपने

वालिदैन को भी गाली देता है ? फ़रमाया : "हां, इस की सूरत येह है कि येह दूसरे के बाप को गाली देता है, वोह इस के बाप को गाली देता है, और येह दूसरे की मां को गाली देता है, वोह इस की मां को गाली देता है।" (مسلم شریف ص٦٠ حدیث١٤٦) येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम (علیہم الرضوان) जिन्हों ने अ़रब का ज़मानए जाहिलिय्यत देखा था, उन की समझ में येह नहीं आया कि अपने मां बाप को कोई क्यूंकर गाली देगा या'नी (कोई मां बाप को गाली भी दे सकता है) येह बात उन की समझ से बाहर थी। हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने बताया कि मुराद दूसरे से गाली दिलवाना है और अब वोह ज़माना आया कि बा'ज़ लोग (बज़ाते) ख़ुद अपने मां बाप को गालियां देते हैं और कुछ लिह़ाज़ नहीं करते। (बहारे शरीअ़त)

आग की शाख़ों से लटकने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** علیہ رحمۃ اللہ القوی नक़्ल करते हैं : **सरवरे काएनात,** शाहे मौजूदात صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है **: मे'राज** की रात मैं ने कुछ लोग देखे जो **आग की शाख़ों से लटके** हुए थे तो मैं ने पूछा **: ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : اَلَّذِيْنَ يَشْتُمُوْنَ اٰبَاءَهُمْ وَاُمَّهَاتِهِمْ فِى الدُّنْيَا या'नी **येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने बापों और माओं को बुरा भला कहते थे।** (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج٢ ص١٣٩ دارالمعرفة بیروت)

बारिश के क़तरों जितने अंगारे

मन्क़ूल है : जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी उस की **क़ब्र** में आग के इतने **अंगारे** उतरते हैं जितने (बारिश के) क़तरे आस्मान से ज़मीन पर आते हैं। (ऐज़न, स. 140)

क़ब्र पस्लियां तोड़ देती है

मन्क़ूल है : जब मां बाप के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो **क़ब्र** उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। (ऐज़न)

जन्नत में नहीं जाएंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رضی اللّٰہ تعالٰی عنہما से रिवायत है, **रसूले ज़ीशान, नूरे रह़मान** صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स जन्नत में नहीं जाएंगे (1) मां बाप को सताने वाला और (2) दय्यूस और (3) मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत।

(اَلْمُستَدرَك ج۱ ص۲۵۲ حديث ۲۵۲)

अगर मां बाप आपस में लड़ें तो औलाद क्या करे ?

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عليه رحمةُ الرَّحمٰن फ़रमाते हैं : अगर मां बाप में बाहम तनाज़ोअ़ (या'नी लड़ाई) हो तो न मां का साथ दे न बाप का, हरगिज़ ऐसा न हो कि मां की **मह़ब्बत** में बाप पर सख़्ती करे। **बाप की दिल आज़ारी या उस को सामने जवाब देना या बे अदबाना आंख मिला कर बात करना येह सब बातें ह़राम हैं और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ना फ़रमानी।**

औलाद को मां बाप में से किसी का ऐसा साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं, वोह दोनों इस की जन्नत और दोज़ख़ हैं, जिसे ईज़ा देगा जहन्नम का ह़क़दार ठहरेगा। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہ (या'नी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) मा'सिय्यते ख़ालिक़ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी) में किसी की इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) नहीं। मसलन मां चाहती है कि बेटा अपने बाप को किसी त़रह़ आज़ार (या'नी तक्लीफ़) पहुंचाए और अगर बेटा नहीं मानता या'नी बाप पर सख़्ती करने के लिये तय्यार नहीं होता तो वोह नाराज़ होती है, तो मां को नाराज़ होने दे और हरगिज़ इस मुआ़मले में मां की बात न माने, इसी त़रह़ मां के मुआ़मले में बाप की न माने। उ़लमाए किराम ने यूं तक़्सीम फ़रमाई है कि **ख़िदमत** में मां को तरजीह़ है और **ता'ज़ीम** बाप की ज़ाइद है कि वोह **इस की मां का भी ह़ाकिम व आक़ा है।** (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 390)

वालिदैन दाढ़ी मुंडवाने का हुक्म दें तो न माने

मा'लूम हुवा मां बाप अगर किसी ना जाइज़ बात का हुक्म दें तो उन की बात न मानें अगर ना जाइज़ बातों में उन की पैरवी करेंगे तो गुनहगार होंगे मसलन मां बाप झूट बोलने का हुक्म दें या दाढ़ी मुंडवाने या एक मुठ्ठी से घटाने का कहें तो उन की येह बातें हरगिज़ न मानें चाहे वोह कितने ही नाराज़ हों, आप ना फ़रमान नहीं ठहरेंगे, हां अगर मान लेंगे तो ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ के ज़रूर ना फ़रमान क़रार पाएंगे। इसी त़रह़ मां बाप में बाहम त़लाक़ हो गई तो अब मां लाख रो रो कर कहे कि दूध नहीं बख़्शूंगी और हुक्म दे कि अपने वालिद से मत मिलना तो येह

हुक्म न माने, वालिद से मिलना भी होगा और उस की ख़िदमत भी करनी होगी कि उन की आपस में अगर्चे जुदाई हो चुकी मगर औलाद का रिश्ता जूं का तूं बाक़ी है, औलाद पर दोनों के हुक़ूक़ बर क़रार हैं।

अगर वालिदैन नाराज़ी में फ़ौत हुए हों तो क्या करे ?

जिस के मां बाप नाराज़ी के आ़लम में फ़ौत हो गए हों, वोह उन के लिये ब कसरत **दुआ़ए मग़्फ़िरत** करे कि मरने वाले के लिये सब से बड़ा तोह़फ़ा दुआ़ए मग़्फ़िरत है और उन की त़रफ़ से ख़ूब ख़ूब **ईसाले सवाब** करे। औलाद की त़रफ़ से मुसल्सल नेकियों के तह़ाइफ़ पहुंचेंगे तो उम्मीद है कि वालिदैने मर्ह़ूमैन राज़ी हो जाएं। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 197 पर है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم ने फ़रमाया : "किसी के मां बाप दोनों या एक का इन्तिक़ाल हो गया और येह उन की ना फ़रमानी करता था, अब उन के लिये हमेशा इस्तिग़फ़ार करता रहता है, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को नेकूकार लिख देता है।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص٢٠٢ حديث ٧٩٠٢) हो सके तो **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रसाइल वग़ैरा ह़स्बे तौफ़ीक़ ले कर ब निय्यते ईसाले सवाब तक़्सीम कीजिये, अगर ईसाले सवाब के लिये वालिदैन वग़ैरा के नाम और अपना पता रिसाले या किताब पर छपवाना चाहें तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ कीजिये।

मां बाप का क़र्ज़ उतारिये

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है :

जो शख़्स अपने वालिदैन के (इन्तिक़ाल के) बा'द उन की **क़सम** सच्ची करे और उन का **क़र्ज़** उतारे और किसी के मां बाप को **बुरा** कह कर उन्हें बुरा न कहलवाए वोह वालिदैन के साथ **भलाई** करने वाला लिखा जाएगा अगर्चे (उन की ज़िन्दगी में) ''ना फ़रमान'' था और जो उन की क़सम पूरी न करे और उन का क़र्ज़ न उतारे और किसी के वालिदैन को बुरा कह कर उन्हें बुरा कहलवाए वोह **ना फ़रमान** लिखा जाएगा अगर्चे उन की ज़िन्दगी में ''**भलाई करने वाला**'' था।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرانی ج٤ ص٢٣٢ حدیث ٥٨١٩ دارالکتب العلمیة بیروت)

जुमुआ़ को मां बाप की क़ब्र पर ह़ाज़िरी का सवाब

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है **:** जो अपने मां बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुमुआ़ के दिन ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा और मां बाप के साथ भलाई करने वाला लिख दिया जाएगा।

(نوادر الاصول للحکیم الترمذی ص٩٧ حدیث١٣٠ دمشق)

दावते इस्लामी का चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन की ना फ़रमानी से ख़ुद को बचाने और उन की इत़ाअ़त का जज़्बा पाने के लिये नीज़ अपने दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और सीना **मह़ब्बते** रसूल का मदीना बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस **मदनी माह़ोल** की बरकत से राहे सुन्नत पर चलने, नेकियां करने, गुनाहों से बचने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

कुढ़ने की सआ़दत नसीब होगी। सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र का मा'मूल बनाइये, मदनी मर्कज़ के इनायत फ़रमूदा नेक बनने के नुस्ख़े ''मदनी इन्आ़मात'' के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये नीज़ रोज़ाना रात कम अज़ कम 12 मिनट **फ़िक्रे मदीना** कीजिये और इस में मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर फ़रमा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों को समझने के लिये एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, **मीरपूर नम्बर 11** (ढाका, बंगलादेश) के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी एक मर्तबा राह चलते हुए एक साह़िब से मुलाक़ात हो गई, मुझे देखते ही वोह कहने लगे : क्या आप को मा'लूम है कि मैं इस वक़्त बीवी बच्चों समेत कहां जा रहा हूं ? फिर ख़ुद ही जवाब देते हुए बोले : दर अस्ल बात येह है कि मेरे वालिदैन मुझ से नाराज़ और मैं **वालिदैन से नाराज़** था। दा'वते इस्लामी के **चेनल** पर होने वाले सुन्नतों भरे बयान ''**मां बाप के हुक़ूक़**'' देखने की बरकत से मुझे एह़सास हुवा कि मैं ने वालिदैन की ना फ़रमानी कर के बहुत बड़ा गुनाह किया है, चुनान्चे **मुआ़फ़ी** मांगने के लिये हाथों हाथ बीवी, बच्चों समेत वालिदैन की ख़िदमत में ह़ाज़िरी के लिये जा रहा हूं, **अल्लाह** तआ़ला दा'वते इस्लामी और ''इस के चेनल'' को दिन दुगनी और रात चोगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله عليه وآله وسلم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

राहे सुन्नत पर चला कर सब को जन्नत की त़रफ़

ले चले बस इक येही है FGN चेनल का हदफ़

या ख़ुदा है इल्तिजा अ़त्तार की

सुन्नतें अपनाएं सब सरकार की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मां की बद दुआ़ से टांग कट गई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार से ''दावते इस्लामी के चेनल'' की इफ़ादियत मा'लूम हुई । इस ''मदनी बहार'' में ''**मां बाप के हुक़ूक़**'' का तज़्किरा है, वाक़ेई मां बाप के हुक़ूक़ से ओ़हदा बर आ होना निहायत दुश्वार है, इस के लिये उ़म्र भर कोशां रहना होगा और **मां बाप** की नाराज़ी से हमेशा बचना होगा । जो लोग **मां बाप** को सताते हैं उन का दुन्या में भी भयानक अन्जाम होता है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा कमालुद्दीन दमीरी عليه رحمة الله القوى नक़्ल करते हैं : ''**ज़मख़्शरी**'' (जो कि मो'तज़िली फ़िर्क़े का एक मशहूर आ़लिम गुज़रा है उस) की एक **टांग कटी हुई** थी, लोगों के पूछने पर उस ने इन्किशाफ़ किया कि येह मेरी **मां की बद दुआ़** का नतीजा है, क़िस्सा यूं हुवा कि मैं ने बचपन में एक **चिड़िया** पकड़ी और उस की टांग में डोरी बांध दी, इत्तिफ़ाक़ से वोह मेरे हाथ से छूट कर उड़ते उड़ते एक दीवार की दराड़ में घुस गई, मगर डोरी बाहर ही लटक रही थी, मैं ने डोरी पकड़ कर ज़ोर से खींची तो **चिड़िया** फड़कती हुई बाहर निकल पड़ी, मगर बेचारी की **टांग** डोरी से कट चुकी थी, **मेरी मां** ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो सदमे से तड़प उठी और उस के मुंह से मेरे लिये येह **बद दुआ़** निकल गई : ''जिस त़रह़

तूने इस बे ज़बान की टांग काट डाली, **अल्लाह** तआला तेरी टांग काटे।" बात आई गई हो गई, कुछ अ़र्से के बा'द तह़सीले इ़ल्म के लिये मैं ने "बुख़ारा" का सफ़र इख़्तियार किया, इस्नाए राह सुवारी से गिर पड़ा, **टांग** पर शदीद चोट लगी, "बुख़ारा" पहुंच कर काफ़ी इ़लाज किया मगर तक्लीफ़ न गई बिल आख़िर टांग **कटवानी पड़ी।** (और यूं मां की बद दुआ रंग लाई) (حیاۃ الحیوان الکبریٰ ج۲ ص ۱۶۳)

पाउं पकड़ कर मां बाप से मुआ़फ़ी मांग लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप के **मां बाप** या उन में से कोई एक नाराज़ है तो फ़ौरन से पेशतर हाथ जोड़ कर, पाउं पकड़ कर और रो रो कर मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब फ़रमा लीजिये, उन के जाइज़ मुत़ालबात पूरे कर दीजिये कि इसी में दोनों जहानों की भलाई है। वालिदैन के हुक़ूक़ की मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की जारी कर्दा दो अ़दद V.C.Ds. (1) **"मां बाप के हुक़ूक़"** और (2) ए'तिकाफ़े रमज़ानुल मुबारक (1430 हि.) में होने वाले "मदनी मुज़ाकरे" की वी.सी.डी बनाम **"वालिदैन के ना फ़रमानों का अन्जाम"** मुलाह़ज़ा कीजिये।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का — वरना है इस में ख़सारा आपका

कीनए मुस्लिम से सीना पाक कर — इत्तिबाए़ साहि़बे लौलाक कर

या ख़ुदा है इल्तिजा अ़त्तार की

सुन्नतें अपनाएं सब सरकार की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द "सुन्नतें और आदाब" बयान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (ابنِ عساکِر ج۹ ص۳۴۳ دارالفکر بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

"राहे मदीना का मुसाफ़िर" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से चलने की 15 सुन्नतें और आदाब

《1》 पारह **15 सूरए बनी इस्राईल** आयत 37 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा। 《2》 दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 78 पर फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा। (مُسلِم ص۱۱۵٦ حدیث ۲۰۸۸) 《3》 सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बसा अवक़ात चलते हुए अपने किसी सह़ाबी का हाथ अपने दस्ते मुबारक से पकड़ लेते। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۷ ص۲۷۷) 《4》 **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो किसी क़दर आगे झुक कर चलते गोया कि आप बुलन्दी से उतर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

रहे हैं । (الشمائل المحمدية للترمذی ص۸۷رقم ۱۱۸) ﴾5﴿ गले में सोने या किसी भी धात (या'नी मेटल की) चैन डाले, लोगों को दिखाने के लिये गरीबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों, मग़रूरों और फ़ासिक़ों की चाल है । गले में सोने की चैन पहनना मर्द के लिये **ह़राम** और दीगर धातों (या'नी मेटल्ज़) की भी ना जाइज़ है ﴾6﴿ अगर कोई रुकावट न हो तो रास्ते के कनारे कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें कि दौड़े दौड़े कहां जा रहा है ! और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें, **अमरद** का हाथ न पकड़े, शहवत के साथ किसी भी इस्लामी भाई का हाथ पकड़ना या मुसाफ़ह़ा करना (या'नी हाथ मिलाना) या गले मिलना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । ﴾7﴿ राह चलने में परेशान नज़री (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिये । ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अबी सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नमाज़े ईद के लिये गए, जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो अहलिया (या'नी बीवी) कहने लगीं : आज कितनी औ़रतें देखीं ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इस्रार किया तो फ़रमाया : **"घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने** (पाउं के) **अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा ।"** (كتابُ الْوَرَع مع موسُوعه امام ابن ابی الدُّنیا ج ۱ص۲۰۵) سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** वाले राह चलते हुए बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखते ही नहीं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) शरअ़न जिस की इजाज़त नहीं उस पर नज़र पड़ जाए ! येह उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का तक़्वा था, मस्अला येह है कि किसी औ़रत पर बे इख़्तियार नज़र पड़ भी जाए और

फ़ौरन लौटा ले तो गुनाहगार नहीं ﴾8﴿ किसी के घर की बालकूनी या खिड़की की त़रफ़ बिला ज़रूरत नज़र उठा कर देखना मुनासिब नहीं। ﴾9﴿ चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जूतों की धमक ना पसन्द थी ﴾10﴿ रास्ते में दो औ़रतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें कि ह़दीसे पाक में इस की मुमानअ़त आई है ﴾11﴿ राह चलते हुए, खड़े बल्कि बैठे होने की सूरत में भी लोगों के सामने थूकना, नाक सिनकना, नाक में उंगली डालना, कान खुजाते रहना, बदन का मैल उंगलियों से छुड़ाना, पर्दे की जगह खुजाना वग़ैरा तहज़ीब के ख़िलाफ़ है ﴾12﴿ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी आड़े आए उसे लातें मारते जाते हैं, येह क़त्अ़न ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रहता है, नीज़ अख़्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकिटों और मिनरल वॉटर की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लात मारना **बे अदबी** भी है ﴾13﴿ पैदल चलने में जो क़वानीन ख़िलाफ़े शर्अ़ न हों उन की पासदारी कीजिये मसलन गाड़ियों की आमदो रफ़्त के मौक़अ़ पर सड़क पार करने के लिये मुयस्सर हो तो "ज़ीब्रा क्रोसिंग" या "ओवर हेड पुल" इस्ति'माल कीजिये ﴾14﴿ जिस सम्त से गाड़ियां आ रही हों उस त़रफ़ देख कर ही सड़क उ़बूर कीजिये, अगर आप बीच सड़क पर हों और गाड़ी आ रही हो तो भाग पड़ने के बजाए वहीं खड़े रह जाइये कि इस में ह़िफ़ाज़त ज़ियादा है नीज़ रेलगाड़ी गुज़रने के अवक़ात में **पटरियां** उ़बूर करना अपनी मौत को दा'वत देना है, रेलगाड़ी को काफ़ी दूर समझ कर गुज़रने वाले को जल्दी या बे ख़याली में किसी तार वग़ैरा में पाउं उलझ जाने की

सूरत में गिरने और ऊपर से रेलगाड़ी गुज़र जाने के ख़त़रे को पेशे नज़र रखना चाहिये नीज़ बा'ज़ जगहें ऐसी होती हैं जहां **पटरी** से गुज़रना ही ख़िलाफ़े क़ानून होता है ख़ुसूसन स्टेशनों पर, इन क़वानीन पर अ़मल कीजिये ﴾15﴿ इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से ह़त्तल इम्कान रोज़ाना **पौन घन्टा** ज़िक्रो दुरूद के साथ पैदल चलिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सिह़ह़त अच्छी रहेगी। **चलने का बेहतर त़रीक़ा** येह है कि शुरूअ़ में 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में 15 मिनट फिर तेज़ क़दम चलिये, इस त़रह़ चलने से सारे जिस्म को वरज़िश मिलेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ निज़ामे इन्हिज़ाम (या'नी हाज़िमा) दुरुस्त रहेगा, दिल के अमराज़ और दीगर बे शुमार बीमारियों से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़िफ़ाज़त होगी।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो　सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो　ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह के लिये "**नेक आ'माल**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ